भूमिका

साहित्य को समाज का प्रतिबिम्ब माना जाता है। एक ऐसा प्रतिबिम्ब जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को चित्रित करता है। नाटक साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो मानव जीवन की जीवंत अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है।देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्याप्त मानवीय जीवन की समस्याओं, विषमताओं, विसंगतियों और संघर्षो के विरुद्ध जिस कला माध्यम ने जन आंदोलनों को आधार बना कर शोषित, पीड़ित जनता को एकजुट किया है, वह है- नुक्कड़ नाटक।नुक्कड़ नाटक का जन्म समय और तात्कालिक परिस्तिथियों की उपज रहा। राजनीतिक-सांस्कृतिक और सामाजिक समीकरणों के बीच यथास्थितिवाद को तोड़ने और मेहनतकश जनता के लिए एक मजबूत वैकल्पिक समाज-व्यवस्था का सपना बुनने में नुक्कड़ नाटक एक मजबूत सांस्कृतिक हथियार रहा है। यह अपने सांस्कृतिक आधार को तात्कालिक परिस्थितियों, नई शैली-पद्धति और दृष्टिकोण के रूप में ग्रहण करता है। आज के जीवन की त्रासदी को झेलते हुए और संघर्ष के बीच गुजरते हुए ही पैदा होता है नुक्कड़ नाटक का रूप और कथ्य। नुक्कड़ नाटक आम जनता के लिए महज मनोरंजन न होकर, उसकी जीवन स्थितियों की दयनीयता और निर्मम सच्चाइयों का ऐसा बयान होते है जो उनमें आत्मसम्मान के साथ जीने की ललक पैदा करता है। यह जनपक्षीय कला आम आदमी के प्रति अपनी जनपक्षधरता और सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रस्तुत करते हुए आज भी अपनी सार्थकता को बनाए हुए है।

जनवादी कला का स्वरूप होने के कारण नुक्कड़ नाटक ने मुझे सदैव आकर्षित किया। अध्ययन के दौरान कॉलेज जीवन में नुक्कड़ नाटक करने के अवसर प्राप्त हुए। उस समय मैंने इसे 'जनता को जनता से जोड़ने' की कला रूप में समझा। इस विधा के अध्ययन के बाद इसकी रचना और प्रस्तुति से जुड़े उन सवालों की तरफ मेरी निगाह गई जिसने बदलते परिप्रेक्ष्य में नुक्कड़ नाटक को बदल दिया।

जिज्ञासा ने कई पहलुओं को विश्लेषित करने की तरफ मेरी रूचि जगाई, जिसके फलस्वरूप मैंने नुक्कड़ नाटक की वस्तुस्थिति को उसके जन्मकाल से आजतक के विभिन परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने का कार्य सोचा। अध्ययन-मनन के बाद मैंने प्रदर्शनकारी कला के इस जनवादी हिस्से को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने के लिए मैंने अपने लघु शोध का विषय "बदलते परिप्रेक्ष्य में नुक्कड़ नाटक" चुना।

नुक्कड़ नाटक का एक विशिष्ट लचीला फॉर्म व शिल्प-विधान होता है। रंगमंचीय सजगता और सुलभता, उच्च उपकरणों का प्रयोग, जन साधारण के बीच से उभरते जीवंत पात्र, बीस-पच्चीस मिनट में किसी गंभीर समस्या का जनभाषा में उद्घाटन कर इसकी व्यावहारिकता, विश्वसनीयता, रोचकता और स्वाभाविकता का प्रमाण प्रदान करते है। नुक्कड़ नाटक की जुझारू चेतना ने अनेक स्तरों पर संघर्ष की भूमिका अदा की है। अनेक आलोचकों, नाटककारों ने इसे नाटक से भिन्न माना है। कुछ ने इसे 'गट्टर थिएटर' की संज्ञा तक दी है। फिर भी इसने अपनी जनवादी छवि को जनता के बीच बनाए रखा।सफ़दर हाश्मी नुक्कड़ नाटक के मील के पत्थररहें।इस रंग-आन्दोलन को नई व्यापकता और नूतन दिशा प्रदान करने में उनके अलावा गुरुशरण सिंह, असगर वजाहत, शिवराम, नरेंद्र मोहन, राजेश कुमार, रमेश उपाध्याय, स्वयं प्रकाश, ब्रज मोहन, शरद जोशी और सुरेश वशिष्ठ का भी महत्वपूर्ण हाथ रहा है। हास्य-व्यंग और विरोध का स्वर नुक्कड़ नाटक की परंपरा से जुड़ा रहा है। यह ग्रोतोव्सकी के 'दरिद्र थिएटर', अमेरिकी 'स्ट्रीट प्ले', 'हैपेनिंग', ब्रेख्त के 'स्ट्रीट कार्नर सीन'(एपिक थिएटर) और बादल सरकार के 'तीसरा रंगमंच'(थर्ड थिएटर) की अवधारणा से प्रभावित है। अनेक संस्थाओं और पत्र-पत्रिकाओं ने भीनुक्कड़नाटक को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जन नाट्य मंच (दिल्ली), निशांत,प्रयोग (दिल्ली), जनवादी रंगमंच (चंडीगढ़), रंगभारती (बीकानेर), युवामंडल (नैनीताल), जन नाट्य संघ, सर्जना, अनागत, कला संगम (पटना), दिशांतर, इप्टा, वातायन, एन०एस०डी०आदि। वहीं विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं जैसे – नुक्कड़

नाटक, बुलेटिन, निशांत नाट्य मंच, नुक्कड़, जनवादी नाटक विशेषांक का विशेष सहयोगरहा है। विद्यालयों- विश्वविद्यालयों में 'आह्वान नाट्य संस्था', 'अस्मिता अभियान', 'अनुचिंतन', 'आयाम' आदि जैसी संस्थाएँ नुक्कड़ नाटक के क्षेत्र में सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

वर्तमान जीवन शैली की गतिशीलता ने मानव को आत्मकेंद्रित बना दिया है, जिसके फलस्वरूप वह अपने तक ही सीमित रह गया है। समाज में घटित होने वाली घटनाओं से जैसे उसका कोई सरोकार ही न रहा हो। आज समाज में आधुनिकता के मायने बदल गए है। भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के बढ़ते प्रभाव से जहाँ तकनीकी के अधिक प्रयोगों ने अभिव्यक्ति के माध्यमों को बदल दिया, वहीं मनुष्य जीवन को भी यंत्रीकृत कर दिया है। कला और साहित्य जैसे जनवादी माध्यमों का प्रभाव जनसाधारण पर कम होता जा रहा है। व्यावसायिकता के दौर में नुक्कड़ नाटक जैसी जनपक्षीय कला का वर्चस्व भी जनता के बीच कम होता जा रहा है। समाज में नुक्कड़ नाटक के प्रति बढ़ती उदासीनता और व्यवसायिक दृष्टि ने नाटककारों और रंगकर्मियों में भी इसके प्रति अरुचि पैदा कर दी है। आज इसका प्रयोग प्रचार-प्रसार हेतु किया जा रहा है। नुक्कड़ नाटक के बदलते समीकरणों में इसके विकास को नये रूप, नई धारणाओं व विभिन्न बदलते परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है। इन बदलते परिप्रेक्ष्य में वर्त्तमान में नुक्कड़ नाटक की क्या सार्थकता है?आज इसकी आवश्यकता किस रूप में है? समाज में इसका क्या योगदान है? क्या चुनौतियाँ आज भी बनी हुई है? और वर्तमान में क्या संभावनाएँ हो सकती है? जैसे प्रश्नों को उठाया जा रहा है।

इन सभी प्रश्नों का उत्तर खोजना और इस जनवादी कला के विकास व उत्थान के लिए एक नई आधारभूमि को किस रूप में तैयार किया जा सकता है, यह शोध का उद्देश रहा है। इस लघु शोध की प्रक्रिया में विषय सामग्री के चयन और तथ्यों के विश्लेषण के लिए विस्तृत अध्ययन और विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों में बाँटा गया है। पहला अध्याय 'नुक्कड़ नाटक

:समय की उपज' है। जिसके अंतर्गत प्रदर्शनकारी कलाओं में नुक्कड़ नाटक के महत्त्व को समझाया गया है। नुक्कड़ नाटक के संक्षिप्त इतिहास को चार दशकों के अंतर्गत समाहित करने का प्रयास किया है। कला के क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक का स्थान जनवादी कला के रूप में रहा है। इसको व्याख्यित करते हुए समाज में इसकी क्या महत्त्वपूर्ण भूमिका और आवश्यकता रही है, उसकी विस्तृत चर्चा की गयी है।

दूसरा अध्याय 'विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में नुक्कड़ नाटक' है। जिसके अंतर्गत राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और साम्प्रदायिक परिप्रेक्ष्यों में कौन-कौन से नुक्कड़ नाटकों को शामिल किया गया है, उनका वर्णन है और उन नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से समाज में व्याप्त समस्याओं, विसंगतियों, और विषमताओं से आम जनता को अवगत कराकर सर्वहारा और शोषित जनता को अपने आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति संघर्ष करने के लिए प्रेरित करने की चर्चा की गयी है।

तीसरा अध्याय 'वर्तमान परिदृश्य में नुक्कड़ नाटक' है। जिसके अंतर्गत आज के बदलते दौर में किस प्रकार भूमंडलीकरण, बाजारीकरण और व्यैक्तिकता के सकारात्मक-नकारात्मक पहलुओं ने समाज, मानव जीवन और नुक्कड़ नाटक जैसी जनवादी कला के स्वरूप को प्रभावित किया है। व्यावसायिकता ने किस प्रकार आज नुक्कड़ नाटक को प्रचार-प्रसार का माध्यम बना दिया है, उसकी चर्चा की गयी है। इन सभी अन्तर्विरोधों के बावज़ूद आज भी इस जनपक्षीय कला ने समाज में अपनी अनिवार्यता को किसी ना किसी रूप में बनाया हुआ है, इस संदर्भ में भी नुक्कड़ नाटक के महत्त्व को जानने का प्रयास किया है।

चौथा अध्याय 'नुक्कड़ नाटक : एक मूल्यांकन' है। जिसके अंतर्गत नुक्कड़ नाटक के रंगविधान को इसकी रचना-प्रक्रिया और प्रस्तुति-प्रक्रिया के माध्यम से जानने का प्रयास किया है। नुक्कड़ नाटक की विशेषताओं और आज के समय में इसकी सार्थकता क्या है, उस पर भी चर्चा की है। नुक्कड़ नाटक के मूल्यांकन के रूप में इसकी उपलब्धियों, चुनौतियों और वर्तमान में क्या-क्या

सम्भावनाएँ इस कला माध्यम में देखी जा रही है, उसका विश्लेषण किया गया है।

रगमंच के क्षेत्र में जनवादी कला होने के कारण नुक्कड़ नाटक का दायरा काफी व्यापक है, जिसे इस लघु शोध में समेटना कठिन है। मेरे द्वारा इस विषय को लघु शोध में परिणत करने की प्रक्रिया में छोटा मगर सकारात्मक हस्तक्षेप ज़रुर है।